International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(4): 151-154
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 21-07-2026
Accepted: 17-08-2026
Publish : 18-08-2026

डॉ. राय साहब पाल
पूर्व शोधच्छात्र,
हिन्दी विभाग,
त्रिपुरा विश्वविद्यालय।

Correspondence:
डॉ. राय साहब पाल
पूर्व शोधच्छात्र,
हिन्दी विभाग,
त्रिपुरा विश्वविद्यालय।

'एक कहानी यह भी' आत्मकथा में आर्थिक परिस्थितियाँ

डॉ. राय साहब पाल

शोध-सारांश :

आर्थिक शब्द से आशय है, जीवन यापन करने के संसाधन। किसी भी व्यक्ति, घर, परिवार, समाज और देश को संचालित करने में धन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रत्येक व्यक्ति का रहन-सहन, खान-पान, वेश भूषा आदि उनके आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है। मन्नू भण्डारी की आत्मकथा में आर्थिक स्थिति का समायानुसार अलग-अलग अभिव्यक्ति की गई है। इन आत्मकथाओं में उनके घर, परिवार और समाज की आर्थिक स्थिति के साथ-साथ देश-विदेश की आर्थिक स्थिति का भी चित्रण किया गया है। दलित समाज की आर्थिक समस्याओं का उल्लेख भी हुआ हैं। दलित समाज में गरीबी और अभाव में बच्चों की अकाल मृत्यु आम बात थी। उनके नाना और नानी मिलकर गाँव का काम संभालते थे। गाँव से मिली जूठन, रोटी, अनाज और उतरन के कपड़ों से उनका जीवन चलता था। उनकी नानी दुख और कष्ट उठाती हुई स्वयं भी गाँव में काम करती थीं। इस आत्मकथा में आर्थिक विषमता, बेरोजगारी और धन संपत्ति को लेकर एक-दूसरे के प्रति द्वेष की भावना, पैसे के लिए हत्या करना आदि का चित्रण भी दिखाई पड़ता है। लेखिका मन्नू भण्डारी ने स्त्रियों की आर्थिक स्थिति का भी उल्लेख किया है। उक्त आत्मकथा में समाज की आर्थिक परिस्थितियों का ही विश्लेषण किया जायेगा।

शब्द-संकेत: मन्नू भण्डारी, आर्थिक, समाज, आत्मकथा,संघर्ष, परिवार।

'एक कहानी यह भी' आत्मकथा में चित्रित आर्थिक परिस्थितियाँ

'एक कहानी यह भी' हिन्दी की एक सुप्रसिद्ध और स्त्री संघर्षों को व्यक्त करने वाली स्त्री की आत्मकथा है। इसमें आर्थिक परिस्थितियों का जो चित्रण हुआ है वह परिवार और समाज के आधार पर किया गया है। परिवार और समाज में आर्थिक परिस्थितियों का उतार-चढ़ाव होता रहता है। समाज में पहले से ही आर्थिक विषमता का भी अत्यधिक प्रभाव रहा है। प्रस्तुत आत्मकथा में मन्नू मण्डारी जी ने समाज में व्याप्त इन्हीं आर्थिक परिस्थितियों को प्रस्तुत किया है।

मन्नू भण्डरी जी ने अपनी आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में तत्कालीन समाज की आर्थिक परिस्थितियों के उतार-चढ़ाव को दर्शाया है। वे अपने और अपने पति राजेन्द्र जी की आर्थिक समस्याओं के माध्यम से शिक्षक और लेखक के जीवन में आने वाले आर्थिक संकटों का उल्लेख किया है। बेरोजगारी की समस्या के कारण वे अपने कैरियर की शुरुआत कोलकाता के एक स्कूल से करती हैं क्योंकि वहाँ हिन्दी पढ़ाने वालों की कमी रहती थी। वे कहती हैं कि *"कलकत्ता में उस समय में शायद हिन्दी पढ़ाने वालों की बहुत कमी रही होगी। इसलिए एम.ए. करने के बाद ही बालीगंज शिक्षा सदनवालों ने आग्रह करके मुझे अपने यहाँ रख लिया। मैं भी तुरंत अपनी स्वीकृत दे दी, बिना यह सोचे*

कि स्कूल से अपना कैरियर शुरू करना भविष्य के लिए कैसा रहेगा।"[1] उस समय प्राइवेट स्कूल के शिक्षकों और लेखकों की जो आर्थिक समस्याएं थीं उसी का चित्रण मन्नू जी ने अपनी आत्मकथा में किया है। एक बड़े लेखक एवं विद्वान व्यक्ति को आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ता है। उनके पति राजेन्द्र जी अपनी शादी तब तक नहीं करना चाहते थे जब तक कि उनका एक स्थाई आमदनी का आधार न बन जाए। क्योंकि लेखन कार्य के भरोसे घर-गृहस्थी चलाना बहुत मुश्किल का काम होता है। मन्नूजी ने एक लेखक के जीवन में आर्थिक समस्याओं का उल्लेख करते हुए कहती हैं कि *"राजेन्द्र का आग्रह था कि मित्रता को संबंध तक ले जाने के लिए वे पहले अपना एक आर्थिक आधार तैयार करेंगे क्योंकि लेखन कार्य की अनिश्चित आमदनी के भरोसे गृहस्थी नहीं चलाई जा सकती।"*[2] उस समय जो समस्या एक पढे-लिखे व्यक्ति की होती थी वही समस्या आज भी हमारे समाज में व्याप्त है।

आज भी ऐसे कई विद्वान हैं जो एक निश्चित आर्थिक आधार न होने के कारण शादी के बंधन में नहीं बधना चाहते हैं या यह कहें कि उन्हें कोई अपनी बेटी ही नहीं देना चाहता हैं। आज बेरोजगारी और आर्थिक समस्याओं के चलते ही विलोम विवाह का प्रमुख कारण बनता जा रहा है। आर्थिक सम्पन्नता को देखते हुए आज लोग अपनी बीस वर्षीय बेटी का विवाह चालीस साल के अधेड़ से कर दे रहे हैं यदि वह सरकारी नौकरी पाया है। यही समस्या एक बड़े लेखक व विचारक के साथ भी आती है। बहुत प्रयासों के बाद भी जब राजेन्द्र जी का आर्थिक आधार तैयार नहीं हुआ तो मजबूरन उनको शादी के बंधनों में बधना ही पड़ा। मन्नू जी उनकी आर्थिक समस्याओं के विषय में बताती हुई कहती हैं कि *"आर्थिक आधार तो तैयार नहीं हुआ और एक बहुत बड़ी दुविधा की स्थिति में राजेन्द्र कलकत्ता आए तो ठाकुर साहब ने उन्हें शादी की दिशा में ठेल ही दिया।"*[3]

राजेन्द्र जी अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए दिल्ली भी गए, लेकिन वहाँ भी उन्हें असफलता ही मिलती है। जहाँ कम पढ़ा लिखा व्यक्ति अपने निजी व्यापार से अच्छा पैसा कमा लेता था, वहीं पढे-लिखे व्यक्ति को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ता था। लेखन कार्य के लिए निजी आय न होने के कारण पढ़े-लिखे व्यक्ति और लेखकों को आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ता था। समाज को नई दिशा देने वाले व्यक्ति को आर्थिक संकटों का सामना करना किसी भी समाज के लिए अच्छा नहीं होता। एक निजी आय न होने के कारण लेखन कार्य में भी बाधा उत्पन्न होती थी। आर्थिक संकट के कारण ही लेखिका की हिम्मत दिल्ली जाने की नहीं हो पाई। वे कहती हैं कि *"चार महीने तक यही कशमश चलती रही कि मैं दिल्ली जाऊँ या राजेन्द्र कलकत्ता आएँ। क्योंकि दिल्ली में तो राजेन्द्र अपना कोई आर्थिक आधार तैयार नहीं कर सके थे। कलकत्ता में मेरे पास एक नौकरी थी जिससे खीच तानकर गृहस्थी की गाड़ी सरकाई जा सकती थी। बहुत ऐश-आराम की चाहत मैंने कभी नहीं की लेकिन रॉयल्टी की अनिश्चित आय के आधार पर दिल्ली जाने की हिम्मत भी मैं नहीं जुटा पा रही थी। मैं नहीं चाहती थी कि आर्थिक संकट जिंदगी की शुरुआत का सारा रंग-रस ही निचोड़ ले। आखिर राजेन्द्र कलकत्ता आने को तैयार हुए और उनकी स्वीकृति मिलते ही मैंने मकान के लिए भागदौड़ शुरू कर दी।"*[4]

कोलकाता में हिन्दी पढ़ाने वालों की संख्या बहुत कमी होने के कारण ही मन्नू जी को नौकरी मिलने में आसानी हुई थी। नहीं तो उन्हें भी राजेन्द्र जी की तरह भटकना पड़ता। इस बात को वे खुद स्वीकारती हैं। बहुत प्रयासों के बाद भी जब राजेन्द्र जी का आर्थिक आधार तैयार नहीं हो पाया तो उन्हें कोलकाता आना ही पड़ता है और एक निश्चित आर्थिक आधार तैयार किए बिना ही उन्हें शादी के बंधनों में बधना पड़ता है।

आर्थिक समस्याओं के कारण ही पढे-लिखे व्यक्ति को कोई किराए पर रूम भी नहीं देना चाहता था। क्योंकि मकान मालिक को अधिक और बिना किसी टीका-टिप्पणी के किराया चाहिए होता है जो एक पढे-लिखे लोगों से मिलना संभव नहीं था। मन्नू जी जब भी मकान मालिक से यह बताती थी कि उनके पति एक लेखक हैं तो लोग रूम देने से मुकरने लगते थे और कोई न कोई बहाना बनाकर मना कर देते थे। इस संदर्भ में मन्नू जी लिखती हैं कि *"मकान मालिक पूछते हैं कि पति क्या करते हैं? तो मैं तो बड़े गर्व से कहती कि लेखक हैं, लेकिन यह सुनते ही उसके तो तेवर ही बदल जाते और फिर कोई ऐसा टालू-सा जवाब पकड़ा दिया जाता कि मैं आवाक्।"*[5] पति-पत्नी की आर्थिक समस्याओं पर भी उन्होंने अपने विचार दिए हैं। पत्नी की सम्पत्ति पर पति अपना अधिकार समझता रहा है। वह पत्नी की संपत्ति को अपनी निजी संपत्ति समझता है और यह चाहता है कि पत्नी उन पैसों को बिना उसकी अनुमति से खर्च न करे।

राजेन्द्र जी कलकत्ता आने के बाद से ही आर्थिक समस्या से मुक्ति पा जाते थे। घर की सारी जरूरतें मन्नू जी के जिम्में थीं। वे इसमें न तो रुचि लेते थे और न ही हस्तक्षेप करते थे। वे धन से संबंधित सारी समस्याओं को अपनी पत्नी के जिम्में छोड़ दिए थे और यह उम्मीद करते थे कि उनके काम में भी वे हस्तक्षेप न करें। ऐसे पुरुष के व्यक्तित्व के विषय में मन्नू जी ने लिखती हैं कि *"अपनी-अपनी जिंदगी का जो बँटवारा हुआ उसमें घर की सारी जिम्मेदारियाँ और समस्याएं- आर्थिक से लेकर दूसरी तरह की-मेरे जिम्में थी, जिसमें मुझे राजेन्द्र की दिलचस्पी की ही नहीं सहयोग की भी जरूरत रहती थी। लेकिन उसे तो राजेन्द्र ने मेरा अधिकार-क्षेत्र घोषित कर रखा था। मेरे अधिकार-क्षेत्र में कभी न झाँकने की न किसी तरह की दिलचस्पी लेने की और न ही कोई हस्तक्षेप करने की बेहद उदारवादी मुद्रा ओढ़कर एक बड़ी वाजिब और तर्क संगत अपेक्षा ये करते थे कि मैं भी इनके अधिकार-क्षेत्र में न कभी झाँकू न किसी तरह की दिलचस्पी लूँ। इनके अधिकार क्षेत्र में थे इनके निजी संबंध और सरोकार जब-तब जहां-तहाँ घूमने-फिरने की और जब मन हुआ पीछे की जरा भी चिंता किए कलकत्ता से भाग निकलने की छूट।"*[6] लेखिका का कहना है कि राजेन्द्र जी घर की ऐसी समस्याओं से दूर रहा करते थे जबकि घर का खर्च चलाने और आर्थिक समस्याओं में दोनों की सहयोग की भावना रहनी चाहिए। लेकिन वे इन चीजों से एक दम बेफिक्र रहते थे और चाहते थे कि उनके भी कार्य में मन्नू जी हस्तक्षेप न करें। समाज में ऐसे कई पुरुष मिल जाएंगे जो पत्नी की कमाई पर अपना पूर्ण हक समझते हैं।

राजेन्द्र जी अपनी आर्थिक आधार मजबूत करने के लिए जवाहर चौधरी के साथ मिलकर अक्षर प्रकाशन की स्थापना करते हैं। दो साल तो यह बहुत अच्छे से चलती है। अक्षर प्रकाशन की ख्याति को देखकर उनके मन में आशा जागती है कि जिस आर्थिक आधार की बात सोची थी वह पूर्ण हो गई। लेकिन यह प्रकाशन ज्यादा दिन तक नहीं चल पाता है क्योंकि ज्यादा टीम-टाम की वजह से पैसे अधिक खर्च हो गए थे। एक ऐसा भी दिन आया जब उन्हें कर्जे लेकर चलाना पड़ता है। दोनों भागीदारों में मतभेद भी हो जाता है और उनका जो एक- दूसरे के प्रति आत्मविश्वास था, वह भी टूट गया। उनके इस आर्थिक संकट का उल्लेख करती हुई मन्नू जी ने लिखा है कि *"अक्षर प्रकाशन की ख्याति अपना एक निजी ऑफिस होने का अहसास, अपनी निजी वस्तुएं..मित्रों-लेखकों से मिलने के अवसर- छोटी-मोती कठिनाइयों के बावजूद आरंभ के दो साल राजेन्द्र जी के लिए बड़े संतोष के दिन थे पर यह सिलसिला ज्यादा दिन नहीं चला। जो थोड़ी-सी जमा पूँजी इकट्ठी की थी, आरंभिक खर्चों और शुरू की टीम-टाम में खर्च हो गई। इसलिए पहला सेट छापने में ही कर्ज लेना पड़ा और कर्जे का यह सिलसिला जो शुरू हुआ तो बढ़ता ही चला गया। दिन-ब-दिन बढ़ता आर्थिक संकट और अर्थ की छुरी से पारस्परिक सद्भावना और संबंधों के रेशों के कटते चले जाने का अनवरत सिलसिला, अक्षर शुरू करने के पहले जो आस्था, जो अटूट विश्वास राजेन्द्र और जवाहर जी के मन में एक दूसरे के लिए था..... देखते ही देखते वह संदेह और आशंकाओं से भरता चला गया।"*[7] एक बुद्धिजीवी वर्ग जिन आर्थिक संकटों का सामना करता है उसे लेखिका ने अपने पति की आर्थिक संकटों के माध्यम से व्यक्त की है। लेखन कार्य के लिए निजी आय न होने के कारण एक लेखक के जीवन में आए आर्थिक संकटों और अपने सगे-संबंधियों से नाता टूटने की पीड़ा को व्यक्त किया है। अधिक दिखावटीपन के कारण यह प्रकाशन अपने विकास की गति को नहीं पकड सका। इसके कारणों की समीक्षा भी मन्नू जी ने बहुत बारीकी से किया है। राजेन्द्र का अडियलपन और बिना सोचे-समझे उनकी कार्य पद्धति के कारण प्रकाशन निरन्तर कर्ज में डूबता जा रहा था। वे लिखती भी हैं कि *"निरन्तर बढते कर्ज का जो हश्र होना था आखिर वही हुआ- दिन-ब-दिन बढता आर्थिक संकट और अर्थ की छुरी से पारस्परिक सद्भाव और सम्बन्धों के रेशों के कटते चले जाने के अनवरत सिलसिला, अक्षर शुरू करने से पहले जो आस्था, जो अटूट विश्वास राजेन्द्र और जवाहरजी के मन में एक-दूसरे के लिए था..देखते ही देखते वह सन्देह और आशंकाओं से भरता चला गया।"*[8]

लेखिका मन्नू जी स्वयं आर्थिक संकट के समय भी अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करती हैं। जब परिवार में कुछ दिन के लिए अतिरिक्त लोग आ गये तो कम पैसों में काम चलाना बहुत मुश्किल हो गया। यह सब देखकर मन्नू जी स्वयं नौकरी के अतिरिक्त भी समय निकालकर छुट्टियों में भी क्लास पढाकर अपना खर्च निकालती हैं। राजेन्द्र जी की आर्थिक दशा देखकर वे स्वयं कहती भी हैं कि *"दिल्ली में पाँच प्राणियों के परिवार को चलाने की सारी जिम्मेदारी तो मेरे ऊपर ही थी। मैं भी करती तो आखिर क्या करती....अन्ततः मुझे छुट्टियों में क्लास पढाने का काम लेना पडा।*

दिल्ली विश्वविद्यालय में प्राइवेट पढाई करने वालों के लिए छुट्टियों के दिनों में कक्षा की व्यवस्था थी।"[9] छुट्टियों में अतिरिक्त क्लास पढाने के अलावा भी आर्थिक स्थिति के कारण टी.वी.के कार्यक्रमों में भी वे जाया करती थीं। इसका जिक्र करती हुई वे स्वयं अपनी आत्मकथा में लिखती भी हैं *"इसके अतिरिक्त टी.वी. के जितने भी प्रोग्राम मिलते,करती..। उन दिनों टी.वी. में यहाँ सई परांजपे थीं और वे मुझे बहुत कार्यक्रम भी देती थीं।"*[10]

निष्कर्ष :

लेखिका मन्नू भण्डारी ने तत्कालीन समाज में लेखकों के आर्थिक संकट के कारणों, विवशताओं तथा संघर्षों के कारण उत्पन्न अवसाद तथा उसके कारण परिवार पर पड रहे उसके प्रभावों को बहुत ही गम्भीरता से उद्घाटित किया है। तत्कालीन समाज में केवल निम्न वर्गीय लोग ही नहीं परेशान थे, बल्कि बुद्धिजीवी वर्ग भी बहुत परेशान था। लेखिका ने अक्षर प्रकाशन आरम्भ करने के पीछे राजेन्द्र जी की दृष्टि और आरम्भ होने के बाद आर्थिक संकट और उसके कारण सम्बन्धों पर पडे प्रभावों को गम्भीरतापूर्वक प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

संदर्भ

1. मन्नू भण्डारी (2008) *"एक कहानी यह भी"* नई दिल्ली राधाकृष्ण पेपरबैक पृष्ठ संख्या 30
2. मन्नू भण्डारी (2008) "एक कहानी यह भी" नई दिल्ली राधाकृष्ण पेपरबैक पृष्ठ संख्या 53
3. मन्नू भण्डारी (2008) "एक कहानी यह भी" नई दिल्ली राधाकृष्ण पेपरबैक पृष्ठ संख्या 54
4. मन्नू भण्डारी (2008) "एक कहानी यह भी" नई दिल्ली राधाकृष्ण पेपरबैक पृष्ठ संख्या 55
5. मन्नू भण्डारी (2008) "एक कहानी यह भी" नई दिल्ली राधाकृष्ण पेपरबैक पृष्ठ संख्या 55
6. मन्नू भण्डारी (2008) "एक कहानी यह भी" नई दिल्ली राधाकृष्ण पेपरबैक पृष्ठ संख्या 157
7. मन्नू भण्डारी (2008) "एक कहानी यह भी" नई दिल्ली राधाकृष्ण पेपरबैक पृष्ठ संख्या 84
8. मन्नू भण्डारी (2008) "एक कहानी यह भी" नई दिल्ली राधाकृष्ण पेपरबैक पृष्ठ संख्या 83-84
9. मन्नू भण्डारी (2008) "एक कहानी यह भी" नई दिल्ली राधाकृष्ण पेपरबैक पृष्ठ संख्या 84-85
10. मन्नू भण्डारी (2008) "एक कहानी यह भी" नई दिल्ली राधाकृष्ण पेपरबैक पृष्ठ संख्या 85